वेब पत्रिका	त्रैमासिक	अंक-01

सितम्बर, 2009

वाणिज्य वाटिका

वाणिज्य विभाग
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
भारत सरकार

वाणिज्य वाटिका

(वाणिज्य विभाग की वेब पत्रिका)

सम्पादक मण्डल

संरक्षक:

पी.के. दाश
संयुक्त सचिव (राजभाषा प्रभारी)

प्रधान सम्पादक:

श्रीमती सुनीति शर्मा
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

सम्पादक:

बी0पी0 सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)

तकनीकी सहयोग:

डा0 वी0के0 शर्मा
वरिष्ठ तकनीकी निदेशक (एनआईसी)

विषय सूची

1.	देश के विकास में सर्व-शिक्षा अभियान की भूमिका	-	ए.सी. मनोज
2.	दर्पण यथार्थ का	-	मंजु ऋषि
3.	सूना-सूना है अब गाँव	-	सूरजपाल चौहान
4.	ग़ज़ल	-	लक्ष्मीनारायण
5.	गजल	-	किशोर कुमार "कौशल"
6.	राजभाषा नीति कविता रूप में	-	शिवराज

आनन्द शर्मा
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि वाणिज्य विभाग की वेबसाइट commerce.gov.in में हिन्दी में "वाणिज्य वाटिका" नामक वेब पत्रिका शुरू की जा रही है । यह एक अनुकरणीय पहल है । हिन्दी हमारी राजभाषा और सम्पर्क भाषा होने के कारण भारत के जन-जन को एकता के सूत्र में पिरोती है ।

राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने के साथ-साथ यह पत्रिका विभाग और इसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों, संगठनों आदि में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों का ज्ञानवर्धन करने के अलावा उनके लिए अपनी रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम सिद्ध होगी । "वाणिज्य वाटिका" की शुरूआत से उनमें हिन्दी के प्रयोग के प्रति रूचि जागृत होगी और वे कार्यालयीन कामकाज में इसके प्रयोग के संबंध में सरकारी नीति का अनुपालन करेंगे ।

मुझे विश्वास है कि "वाणिज्य वाटिका" में शामिल सुरूचिपूर्ण रचनाएं हमारी वेबसाइट देखने वाले सभी वर्गों को अपनी ओर आकृष्ट करेंगी । इसकी सफलता के लिए सम्पादक मण्डल को मेरी शुभकामना ।

(आनन्द शर्मा)

ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया
वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि वाणिज्य विभाग ने अपनी वेबसाइट commerce.gov.in में एक वेब पत्रिका "वाणिज्य वाटिका" आरम्भ की है । आज का युग प्रौद्योगिकीय प्रगति और इन्टरनेट का युग है । अतः पारम्परिक तरीके से पत्रिका के प्रकाशन के स्थान पर वेब पर ही पत्रिका की शुरूआत करना मितव्ययिता की दृष्टि से भी एक सराहनीय पहल है । वाणिज्य विभाग तथा इसके अन्तर्गत आने वाले कार्यालयों, संगठनों में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों की रचनात्मकता को अभिव्यक्त करने के लिए यह एक सशक्त मंच है । इस पत्रिका के माध्यम से उनके लेख, निबंध, कविताएँ, कहानियां, संस्मरण आदि इन्टरनेट के जरिए देश-विदेश के पाठकों तक पहुँचेंगे । मुझे आशा है कि पत्रिका की रचनाओं को स्तरीय एवं उत्कृष्ट बनाए रखने का प्रयास किया जाता रहेगा ।

"वाणिज्य वाटिका" के शुभारम्भ के लिए सम्पादक मण्डल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

(ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया)

नई दिल्ली
दिनांकः 22 सितम्बर,2009

सम्पादकीय

हिन्दी वह भाषा है, जो विभिन्न मातृ-भाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सर्जन करेगी ।

भाषा भाव सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम ही नहीं अपितु वह राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सांस्कृतिक अस्मिता की संवाहिका भी है । भाषा के माध्यम से ही अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों का संरक्षण किया जा सकता है । हिन्दी वैज्ञानिक और ध्वन्यात्मक भाषा है । समृद्ध साहित्य, वृहद शब्द सम्पदा, सर्व समावेशी क्षमता इसके अन्तर्निहित गुण हैं । हिन्दी राजभाषा है और सरकारी कार्य में इसका अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा संवैधानिक दायित्व भी है ।

विभाग की इस वेब-पत्रिका की शुरूआत संयुक्त सचिव (श्री पी. के. दाश) की प्रेरणा और उनके मार्ग-दर्शन से ही संभव हुई । इसके प्रवेशांक में कुछेक पुरस्कृत निबंध/ कविताओं के अलावा विभाग के नियंत्रणाधीन संगठनों में कार्यरत कार्मिकों की रचनाओं को स्थान मिल पाया है । इसके कलेवर में धीरे-धीरे विस्तार किया जाएगा । सुधी पाठकों से अनुरोध है कि सम्पादक मंडल को अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान करें ताकि यह पत्रिका गागर में सागर भरते हुए अजस्त्र भाव से प्रवाहित होती रहे ।

(सुनीति शर्मा)
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

देश के विकास में सर्व-शिक्षा अभियान की भूमिका

(सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2008 के दौरान प्रथम पुरस्कृत निबंध)

ए.सी. मनोज*

देश के विकास से तात्पर्य है देशवासियों का सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास । इसके फलस्वरूप, रंगभेद, ऊंच-नीच, धार्मिक विभेद आदि को दूर करते हुए विपन्नता, निरंकुशता, कामचोरी आदि कमियों को दूर कर क्रमशः संपन्नता, मेहनत आदि जैसे उच्च जीवन मूल्यों की प्राप्ति हेतु सतत प्रयास करना और उपर्युक्त वर्णित जीवन मूल्यों की प्राप्ति हेतु एक मात्र रास्ता है - शिक्षा । ऐसी शिक्षा जो सबको मिले । इसी मूलभूत उद्देश्य की प्राप्ति हेतु 1998 में राज्यों के शिक्षामंत्रियों की बैठक में की गई सिफारिशों के आधार पर सर्व शिक्षा अभियान का जन्म हुआ ।

संविधान के अनुच्छेद 21क के अंतर्गत राज्य 6 से 14 वर्ष तक के बच्चे को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा । इस बात को संविधान संशोधन 86 के माध्यम से शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार माना गया । शिक्षा के महत्व को समझते हुए अनेक शैक्षणिक कार्यक्रमों के अनुक्रम में सर्व शिक्षा अभियान चलाया गया जिसका मुख्य उद्देश्य था कि 2010 तक देश के 6-16 वर्ष तक के बच्चों को सार्वभौमिक और अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाए जिसमें जात-पात, लिंग, अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक आदि का कोई भेद-भाव न हो ।

2001 से प्रारंभ किए गए इस अभियान ने अभूतपूर्व प्रगति की है । जहाँ वर्ष 2003 तक स्कूली शिक्षा से वंचित 25 मिलियन बच्चे थे वहीं 2005 में यह संख्या घट कर 14.5 मिलियन रह गई है । सरकार की ओर से भी इस अभियान को पूर्ण करने हेतु हर संभव मदद दी गई । वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम ने 2006-07 में स्कूली शिक्षा के लिए 17133 करोड़ रूपए प्रदान किये थे वहीं 2007-08 में यह राशि बढ़ाकर 23142 करोड़ रूपए कर दी । शिक्षा की महत्ता को देखते हुए ही उन्होंने इस बजट में 35% की वृद्धि की है । इस राशि में से 10671 करोड़ रूपए सर्व शिक्षा अभियान के लिए नियत किए गए हैं ।

सरकार भली-भाँति समझती है कि जब तक देश में शैक्षणिक विकास नहीं होगा, तब तक हम विकसित राष्ट्र नहीं बन सकेंगे । शिक्षा ही वह हथियार है जिसके माध्यम से देश के अंदर मौजूद विध्वंसक/बाधक तत्वों से मुक्ति मिल सकेगी । परंतु आज भी भारत के करोड़ों बच्चे स्कूली शिक्षा से वंचित हैं । महात्मा गाँधी ने भी कहा था कि भारत गाँवों का देश है और स्पष्टतः आज भी भारत की 78% जनता गाँवों में रहती है, जहाँ शिक्षा हेतु स्कूलों और उच्च

संस्थानों का सर्वथा अभाव है । गरीबी इतनी है कि बच्चे स्कूल जाने के बजाए माँ-बाप के साथ जीविकोपार्जन में लग जाते हैं ।

ऐसी विकट परिस्थिति में सर्व-शिक्षा अभियान उन तमाम बच्चों के लिए वरदान बनकर सामने आया है । अब उनके मन में आस जगी है कि हम भी प्रारंभिक शिक्षा से उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश के विकास में सहयोग देंगे । ये बातें अत्यंत उत्साहवर्धक हैं । परंतु कुछेक बातें हमे मायूस करती हैं । इस मिशन को प्राप्त करने हेतु लाखों स्कूलों और शिक्षकों की जरूरत होगी । शिक्षकों में गुणवत्ता लानी होगी । अवसंरचना का विकास करना होगा । लेकिन हमें इतना मायूस होने की जरूरत नहीं है । सरकार इस अभियान के प्रति प्रतिबद्ध है और इसे पूरा करने के लिए सामने आने वाली हर चुनौतियों का हर संभव सामना करेगी ।

सरकार अवसंरचना के विकास, शिक्षकों की भर्ती व प्रशिक्षण हेतु संबंधित विभागों से पूरा सहयोग प्राप्त कर रही है । शिक्षकों की गुणवत्ता, भर्ती आदि के लिए इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण परिषद, एनसीईआरटी, एससीईआरटी आदि के माध्यम से शिक्षण व प्रशिक्षण दिया जा रहा है और जहाँ 2006-07 के दौरान 1,33,928 प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गई, वहीं 7.95 लाख शिक्षकों की भर्ती कर उन्हें इस महान यज्ञ में शामिल किया ।

बच्चे स्कूल से नहीं भागें और बने रहने हेतु वर्तमान सरकार ने मध्याह्न भोजन योजना प्रारंभ की । भारतीय खाद्य निगम और परिवहन सब्सिडी के जरिए इसमें सहायता दी गई । इस बात का ध्यान रखा गया कि बच्चों को पौष्टिक आहार मिले । किताब-कापियों की कमी नहीं होने पाए । 2006-07 के दौरान करोड़ों किताबें बच्चों को प्रदान की गईं । इन तमाम प्रयासों के बाद सरकार ने बच्चों को स्कूली शिक्षा देकर करोड़ों को शिक्षित किया है ।

सीएजी ने भी 2004-05 की निष्पादन रिपोर्ट पेश करते हुए टिप्पणी की थी कि सरकार का यह कार्यक्रम सुचारू ढंग से चल रहा है परंतु कुछ और प्रयास की जरूरत है । इस महान यज्ञ में संयुक्त राष्ट्र की शिक्षा परिषद ने 4700 करोड़ रूपये प्रदान किए हैं और अपनी रिपोर्ट के माध्यम से यह संतोष व्यक्त किया है कि अशिक्षा को दूर करने में यह कार्यक्रम अच्छा काम कर रहा है ।

प्रधानमंत्री इसकी निगरानी करते हैं और अनियमितता पर अंकुश लगाते हैं । अतः यह कार्यक्रम बच्चों को शिक्षा देकर, शिक्षकों को प्रशिक्षित कर शिक्षा के महती उद्देश्य अर्थात देश के विकास में योगदान देगा । हम यह उम्मीद करते हैं ।

....

* उच्च श्रेणी लिपिक, वाणिज्य विभाग

दर्पण-यथार्थ का
(हिन्दी पखवाड़ा, 2008 के दौरान प्रथम पुरस्कृत कविता)

मन्जु ऋषि*

मेरी आखों के सामने था दर्पण
गुमान कर रही थी मैं अपने रूप पर
अपने मृगनयनी होने पर, अपने कुसुम कपोलों पर

कमल की अधखुली पंखुरियों जैसे होठों पर
सूर्य की तरह दीप्तिमान अपने उजले गोरे रंग पर
और सुन्दर कलाइयों पर भी मुझे गुमान हुआ ।

और इसी गुमान में एक हल्की सी मुस्कुराहट खेल जाती थी मेरे चेहरे पर
जो कभी लाज की लाली मुझमें भर देती थी
तो कभी मेरी आखों में चमक

मैं खोई रही हसीन विचारों में
और पढ़ने लगी अखबारों में
इन खबरों को --

मिलावट के कारनामों की, कश्मीर के उग्रवादियों की
पाकिस्तान की चालों की, बढ़ती महँगाई और
घटते स्तर की

बसों की टक्कर और दुर्घटनाओं की,
चोरी, डकैती, मारामारी की,
बलात्कारों की, फैशन शो में बढ़ती अश्लीलता की

जैसे-जैसे मैं खबरों को पढ़ती गई,
मेरे सौन्दर्य का नशा उतरने लगा,
दुख हुआ मुझे......,

दुख हुआ मुझे
अपने मृगनयनों पर, कुसुम कपोलों पर,
कमल की अधखुली पंखुरी जैसे होठों पर
गोरे रंग और कलाइयों की सुंदरता पर भी दुख हुआ

दुख हुआ मुझे, कि ये नयन पढ़ते हैं रोज इन्हीं खबरों को
मगर रोक नहीं पाते इन्हें अपनी आखों के सामने होते हुए
ये होंठ सिल जाते हैं गलत कार्य के खिलाफ
बुराई को चुपचाप गले के नीचे उतार जाने को

दुख हुआ मुझे गोरी चमड़ी का
क्योंकि इस गोरी चमड़ी के भीतर छुपी हैं काली आत्माएं
जो गंगा की पवित्रता को विष में परिवर्तित करने को रहती हैं आतुर
और ये हाथ - ये हाथ नहीं कर पाते कुछ
अन्याय और अत्याचार के सम्मुख
दुख हुआ मुझे

और लाज से लाल हुए गालों पर, छा गया पीलापन
आखों में आँसू, होठों में फड़फड़ाहट, और
दिल में हाथों के कटे होने का अहसास

गुमान से भरा मेरा चेहरा, हो गया आभाहीन और निस्तेज
मेरी आखों के सामने फिर था "दर्पण", "यथार्थ का दर्पण"
जो दिखा रहा था झलक समाज की, उस समाज की
जिसकी मैं थी एक इकाई
और उसे देखकर हुआ मुझे कुरूपता का एहसास

....

* अनुभाग अधिकारी, वाणिज्य विभाग

सूना-सूना है अब गाँव

सूरजपाल चौहान*

सूना-सूना है अब गाँव
सूनी है चौपाल वहाँ अब
नहीं नीम की ठंडी छाँव ।
सूना-सूना है अब गाँव ।।

खेती के लालच में आकर
बाग-बगीचे काट दिये सब
आना-जाना रास रचाना
तोता-मैना भूल गए अब
बोलो कोयल कैसे कुहके
ठंडक नहीं, घाम ही घाम ।
सूना-सूना है अब गाँव ।।

ताल, तलैया, पोखर सारे
मिट्टी से सब पाट दिये हैं
चौपालों के नाते-रिश्ते
कितने बारहबांट किये हैं
नहीं थिरकते अब गलियों में
रूनझुन-रूनझुन करते पांव ।
सूना-सूना है अब गाँव ।।

लोप हो गया लोकगीत का
फिल्मी गीत लोग गाते हैं
भेद हुआ कथनी करनी में
सत्य-धर्म से कतराते हैं
अपने-अपने टोल बनाकर
लगा रहे सब अपने दांव ।
सूना-सूना है अब गाँव ।।

शहर-सभ्यता के चक्कर में
कैसे-कैसे काम किये हैं
हैंड पम्प के जाल से देखो
गाँव के पनघट भी सूने हैं
गैया, बछड़ा नजर न आते
उजड़ा-उजड़ा उनका ठांव ।
सूना-सूना है अब गाँव ।।

दादा जी का प्यारा हुक्का
कोने में अब मौन पड़ा है
ताऊ, चाचा नजर न आते
"अंकल" उनका नाम पड़ा है
आपा-धापी के इस युग में
डगमग-डगमग करती नाव ।
सूना-सूना है अब गाँव ।।

....
प्रबन्धक (प्रशासन), स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि0,
नई दिल्ली - 110001

हिन्दी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है । (राजा राममोहन राय)

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है । (कविवर सुमित्रानन्दन पन्त)

ग़ज़ल

लक्ष्मी नारायण*

चेहरों पर इतने नकाब चढ़ गए
अस्ल चेहरा सामने आता नहीं ।।

लोग नगाड़ों के आदी हो गए
बांसुरी का स्वर उन्हें भाता नहीं ।।

बच्चे किताबों में उलझते रहे
खेलने का वक्त मिल पाता नहीं ।।

बन्दरों के हाथ में हैं उस्तरे
दाढ़ी इस डर से मैं बनवाता नहीं ।।

घर के बड़े-बूढ़े बोझ बन गए
प्यार से कोई उनसे बतियाता नहीं ।।

पेट पर चढ़ कर आगे बढ़ गए
पीछे रह जाने का डर जाता नहीं ।।

वक्त गुजारना दोस्ती हो गया
रूह से कोई इश्क़ फ़रमाता नहीं ।।

इन्सानियत पर स्वार्थ हावी हो गए
अब किसी का दर्द तड़पाता नहीं ।।

....

प्रबंधक (राजभाषा), स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि0,
नई दिल्ली - 110001

संसार में यदि कोई सर्वांगपूर्ण अक्षर है, तो देवनागरी के हैं ।
(आइजक पिटमैन)

हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्त्तव्य है । उसे हम सबको अपनाना है ।
(लाल बहादुर शास्त्री)

कोई भी भारतीय, दो-तीन वर्षों में हिन्दी में प्रशासकीय
कार्य करने की योग्यता प्राप्त कर सकता है ।
(हरिबाबू बंसल)

ग़ज़ल

किशोर कुमार "कौशल"*

जो गुल करते चरागों को उमर भर हाथ मलते हैं,
मिसालें जिनकी बनती हैं मशालें ले के चलते हैं ।

जिसे पत्थर समझकर देखते हैं सब हिकारत से,
उसी पर्वत के सीने में कई दरिया मचलते हैं ।

जहॉं में लोग अक्सर वक्त पर मुँह फेर लेते हैं,
भले इंसान आड़े वक्त में भी साथ चलते हैं ।

थकन से चूर आते शाम अपने आशियाने पर,
सवेरे बन सँवर के रोज फिर घर से निकलते हैं ।

खटकता है बुजुर्गों को यही इस दौर में "कौशल"
नई पीढ़ी के ठंडी रेत पर भी पाँव जलते हैं ।

....

उप प्रबंधक (राजभाषा), स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि0,
नई दिल्ली - 110001

इसमें सन्देह नहीं कि राष्ट्रीय एकता में हिन्दी का स्थान महत्वपूर्ण है ।
(निजलिंगप्पा)

नागरी -लिपि से बढ़कर वैज्ञानिक लिपि मैंने दुनिया में कोई दूसरी पायी नहीं ।
(आचार्य विनोबा भावे)

हिन्दी प्रेम की भाषा है
(महादेवी वर्मा)

यह प्रत्येक नागरिक का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में आगे बढ़ाएं ।
(मेहंदी नवाज जंग)

काश्मीर से कन्या कुमारी तक एक राष्ट्रभाषा हिन्दी की जय हो
(सातवलेकर)

राजभाषा नीति
कविता रुप में

शिवराज *

सर्वांगीण विकास हो भारत का, संविधान की यह अभिलाषा है ।
जिसके अनुच्छेद 343 में, हिंदी संघ की राजभाषा है ।।
संविधान के निर्माताओं ने, बहुमत से इसे सुझाया था ।
इसे समझते सबसे ज्यादा, ऐसा मन में आया था ।।

यही सोचकर हिंदी को इसकी, उचित जगह सौंपी जाए ।
लेकिन ध्यान रहे इस मध्यमणि को, जबरन न थोपी जाए ।।
राजभाषा अमलीजामा पहनाने को, 1963 अधिनियम बनाया ।
जिसकी अपेक्षानुसार इसे, कानूनी दर्जा मिल पाया ।।

फिर इसमें कुछ संशोधन करके ,   1976 नियम बनाया ।
जिसके अंतर्गत प्रावधानों ने, हिंदी को बहुत बढ़ाया ।।
जिसने इसकी उत्तरोत्तर प्रगति को, ऐसी दिशा में मोडा है ।
अंग्रेजी के साथ हिंदी भी हो, धारा 3 (3) को जोड़ा है ।।

निर्धारित प्रयोजनों की खातिर, इसकी एक खासियत है ।
इसके अधीन सब मदों को, करना ही द्विभाषिक है ।।
जैसे,-
संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं,
प्रशासनिक अन्य प्रतिवेदन, करार और संविदाएं ।
प्रेस विज्ञप्तियां, अनुज्ञप्तियां और निविदाएं,
अनुज्ञापत्र, निविदा प्रारुप और निविदा सूचनाएं ।।

संसद के किसी सदन/ सदनों के समक्ष,
रखी जाने वाली रिपोर्ट, और सामग्री इसमें आती है ।
केवल अंग्रेजी का प्रयोग जो रोके, धारा 3 (3) कहलाती है ।।

नियत लक्ष्य निर्धारत करके रा.भा. एक वार्षिक कार्यक्रम बनाता है ।
क्या अनिवार्य करना है इस हेतु, वह हम सबको राह दिखाता है ।।
अब समस्त भारत के कार्यालयों में, हिंदी पत्राचार स्वीकार्य है ।
निर्देश है ऐसे अब पावक को भी, हिंदी उत्तर देना अनिवार्य है ।।

प्रेम से करके प्रचार/ प्रसार से ही, यह संभव हो पाया है ।
काफी कार्य हो रहे हिंदी में, यह सर्वत्र निगाह में आया है ।।
वैसे भी हिंदी शिक्षण/ कार्य हेतु, कई प्रोत्साहन योजनाएं हैं ।
यह और बढेगी हर क्षेत्र में, यही प्रबल संभावनाएं हैं ।।

---

* हिंदी स्टैनोग्राफर, भारतीय निर्यात निरीक्षण परिषद